

Q.1. अणु अर्थशास्त्र तथा वृहत् अर्थशास्त्र के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए तथा दोनों प्रकार के विश्लेषणों की सीमाओं को बतलाइये।

(Distinguish between Micro and Macro economics and point out the limitations of both kinds of analysis.)

Or, आप अणु अर्थशास्त्र तथा वृहत् अर्थशास्त्र में अन्तर कैसे करेंगे ?

(How would you distinguish between micro economics and macro economics?)

Ans. अर्थशास्त्र के अध्ययन एवं विश्लेषण की दो मुख्य रीतियाँ हैं—एक अणु रीति तथा दूसरी वृहत् रीति। वर्तमान में इनकी महत्ता के कारण इनका अधिक उपयोग होने लगा है।

1. **अणु अर्थशास्त्र (Micro Economics)** - अणु अर्थशास्त्र वह है जिससे विशेष व्यक्तियों, परिवारों, उद्योगों, फर्मों, विशेष वस्तुओं के मूल्यों, श्रमिकों की मजदूरी और आय इत्यादि का अध्ययन किया जाता है। बोल्लिंग के अनुसार "अणु अर्थशास्त्र विशेष फर्मों, विशेष परिवारों, वैयक्तिक मूल्यों, मजदूरियों, आय, व्यक्तिगत उद्योगों तथा विशिष्ट वस्तुओं का अध्ययन है।" "*Micro-Economics is the study of particular firms, particular households, individual prices, wages, incomes, individual industries of particular commodities.*" - K. E. Boulding इस प्रकार आर्थिक अणु रीति में उपयोगिता हास नियम, उपभोक्ता का बचत सिद्धांत, सम-सीमान्त उपयोगिता हास नियम, उपभोक्ता क्षेत्र में व्यक्तिगत फर्म, निजी उद्योग, उत्पत्ति के क्षेत्र में तथा राष्ट्रीय आय का विभिन्न उत्पत्ति के साधनों में बँटवारा, वितरण के क्षेत्र आदि सम्मिलित होता है। बैंकिंग, विदेशी विनिमय तथा राजस्व आर्थिक अणु रीति के क्षेत्र से बाहर है।

अणु अर्थशास्त्र का महत्व (Importance of micro economics)

अणु अर्थशास्त्र से किसी देश की अर्थव्यवस्था को पूरी तरह समझा जाता है। इसके द्वारा देश की अर्थ व्यवस्था का पूर्ण निर्माण होता है। यह रीति व्यक्तिगत फर्मों, परिवारों, उद्योगों के आय-व्यय के निर्माण करने, श्रमिक को मजदूरी देने, वस्तुओं का मूल्य निश्चित करने, लोगों को बचत व व्यय करने का निर्णय आदि करने में सहायक है।

अणु अर्थशास्त्र की सीमायें (Limitations of micro economics)

अणु रीति की निम्नलिखित सीमायें हैं-

(1) अणु रीति के द्वारा कुछ व्यक्तिगत फर्मों, उद्योगों, मजदूरों के वेतन आदि का अध्ययन किया जाता है और कुछ फर्मों, उद्योगों, देश की मजदूरी स्तर की उपेक्षा की जाती है।

(2) अणु रीति से प्रतिपादित नियम देश की अर्थव्यवस्था के लिए हानिकार होते हैं। उदाहरणार्थ किसी व्यक्ति को पत्र-मुद्रा अधिक मात्रा में मिले तो वह धनी बन जाता है, लेकिन यदि देश में पत्र-मुद्रा बढ़ जाये तो देश धनवान नहीं बनता।

(3) अणु रीति में निजी हित पर प्रकाश डाला जाता है जिसका वर्तमान में कोई महत्व नहीं रह गया है।

2. **वृहत् अर्थशास्त्र (Macro economics)** - वृहत् अर्थशास्त्र के अन्तर्गत सम्पूर्ण का अध्ययन किया जाता है। उदाहरणार्थ कुल उपभोग, कुल बचत, कुल विनियोग, कुल रोजगार, कुल माँग तथा कुल राष्ट्रीय आय। बोल्लिंग के अनुसार, "वृहत् अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र के अध्ययन का वह भाग है, जो अर्थव्यवस्था के बड़े समूहों की उपयोगी ढंग पर परिभाषा देने का प्रयास करता है और यह स्पष्ट करता है कि समूह किस प्रकार संबंधित है और किस प्रकार निर्धारित होते हैं।" "*Macro-economics, then is that part of the subject which deals with the great aggregates and averages of the system rather than with particular items in it, and attempts to define these aggregates in a useful manner to examine their relationship.*" - Boulding, Economic Analysis, इस प्रकार वृहत् अर्थशास्त्र में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, विदेशी विनिमय, मौद्रिक नीति, व्यापार चक्र, राजस्व, रोजगार के सिद्धांत, धन का वितरण आदि आते हैं।

वृहत् अर्थशास्त्र का महत्व (Importance of Macro economics)

वृहत् अर्थशास्त्र का निम्नलिखित महत्व है-

(1) वृहत् अर्थशास्त्र धन के वितरण, उत्पादन, रोजगार जैसी जटिल समस्याओं के समाधान में सहायता करता है।

(2) वृहत अर्थशास्त्र देश-निर्माण से संबंधित महत्वपूर्ण आर्थिक नीतियों को बनाने में सहायता करता है, जिससे सम्पूर्ण समाज का कल्याण होता है।

(3) वृहत अर्थशास्त्र अणु-रीति के प्रतिपाद से होने वाली हानियों से बचाता है।

(4) वृहत अर्थशास्त्र देश में कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिए आर्थिक-नीति-निर्माण करने में सहायक होता है।

वृहत अर्थशास्त्र की सीमाएँ (Limitations of Macro economics)

वृहत अर्थशास्त्र की निम्नलिखित सीमाएँ हैं-

(1) जो बात व्यक्तिगत रूप से सही हो, आवश्यक नहीं है कि वह सामूहिक रूप से भी सही हो। उदाहरणार्थ यदि एक व्यक्ति बैंक से अपनी बचत निकालता है तो कोई बात नहीं, लेकिन यदि सब व्यक्ति अपनी-अपनी बचतें बैंक से निकाल लें तो देश को हानि होती है। क्योंकि बैंकिंग उद्योग तथा कृषि व्यवस्था को नुकसान होता है। इसके विपरीत यदि एक व्यक्ति बचत करता है, तो कोई बात नहीं, लेकिन यदि सारा समाज बचत करने लग जाये तो उत्पादन-प्रणाली भंग हो जाती है।

(2) व्यक्तिगत इकाइयाँ मिलकर समाज का निर्माण करती हैं। वृहत अर्थशास्त्र इनकी उपेक्षा करता है जिससे वृहत अर्थशास्त्र के निष्कर्ष दोषपूर्ण रहते हैं। उदाहरणार्थ-यदि दो निश्चित समय के बीच मूल्य-स्तर सामान्य रहा हो, तो यह सामान्य मूल्य भिन्न-भिन्न वर्ग का औसत होता है। जब हम दो निश्चित समय के बीच मूल्यों की ओर संकेत करते हैं तो इसका तात्पर्य यह है कि समाज के विभिन्न वर्गों के व्यापारी, कृषक तथा उपभोक्ता आदि के बीच आय का वितरण भी स्थिर रहा हो, लेकिन यह बात त्रुटिपूर्ण है। हो सकता है ऐसे समय में कृषि-वस्तु के मूल्य बढ़ गये हों और औद्योगिक वस्तुओं के मूल्य घट गये हों।

(3) यह संभव है कि कुछ समूह महत्वपूर्ण न हों। जैसे-सामान्य मूल्य-स्तर विभिन्न वस्तुओं के औसत मूल्य से बनता है। कुछ वस्तुओं के मूल्य तेजी से और कुछ वस्तुओं के मूल्य धीरे-धीरे घटते हैं जैसे मकान के किराये। जब सामान्य मूल्य-स्तर का निर्माण किया जाता है तो इसमें जटिलता उत्पन्न हो जाती है, जो महत्वपूर्ण नहीं होती है।

(4) वृहत अर्थशास्त्र में समूह का निर्माण विभिन्न स्वभाव वाले तत्वों से मिलकर होता है जिसके कारण समूह को मापना कठिन हो जाता है। जैसे-राष्ट्रीय आय की गणना में विभिन्न वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य को मुद्रा में मापा जाता है।

(5) समूह की अपेक्षा उसकी रचना अधिक महत्वपूर्ण होती है। इसलिए समूह की इकाइयों को तोड़कर उनको पृथक-पृथक किया जाना चाहिए, तब ही निष्कर्ष सही निकलेंगे।

अणु अर्थशास्त्र तथा वृहत अर्थशास्त्र एक दूसरे के पूरक हैं (Micro economics and Macro economics are both complementary)

अणु अर्थशास्त्र तथा वृहत अर्थशास्त्र एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। अणु अर्थशास्त्र की समस्याओं को समझने में वृहत अर्थशास्त्र तथा वृहत अर्थशास्त्र की समस्याओं को समझने में अणु अर्थशास्त्र सहायक है। इस संबंध में सेम्यूलसन ने कहा है, "अणु अर्थशास्त्र तथा वृहत अर्थशास्त्र में वास्तव में कोई विरोध नहीं है। यदि आपको एक का ज्ञान है और दूसरे से अनभिज्ञ हैं, तो आप आधे शिक्षित हैं। अतः दोनों रीतियाँ एक-दूसरे पर निर्भर हैं।" (There is really no opposition between micro and macro economics. Both are absolutely vital. And you are only half educated, if you understand the one while being ignorant of the other.)

सूक्ष्म तथा व्यापक अर्थशास्त्र में अन्तर

(Difference between Micro and Macro Economics)

1. सूक्ष्म या व्यक्ति अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत या विशिष्ट इकाइयों (Individual Units) का अध्ययन किया जाता है। जैसे एक उपभोक्ता, एक वस्तु की कीमत, प्रति व्यक्ति आय आदि अर्थात् किसी योग टुकड़ों में बाँटकर अध्ययन करना (Disaggregation) जैसे, किसी सुन्दर नारी के अलग-बगल अंगों का अध्ययन करना।

व्यापक अर्थशास्त्र में सामूहिक अध्ययन या समूह के व्यवहार या योग के आधार पर अध्ययन किया जाता है। जैसे राष्ट्रीय आय, कुल रोजगार आदि।

2. सूक्ष्म अर्थशास्त्र में योग के प्रत्येक भाग का अलग-अलग अध्ययन करके आर्थिक समस्या का समाधान किया जाता है। जैसे, कुल उत्पादन को उपभोग वस्तुओं एवं पूँजीगत वस्तुओं के रूप में अलग-अलग अध्ययन किया जायेगा। व्यापक अर्थशास्त्र में हम सामूहिक अध्ययन के आधार पर किसी निष्कर्ष को निकाल लेते हैं। उदाहरण के लिए 1994-95 में भारत के विदेशी विनिमय कोष में वृद्धि होने से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत के विदेशी व्यापार में विस्तार हुआ है, भले ही किसी वस्तु विशेष का निर्यात कम हुआ हो।

3. सूक्ष्म अर्थशास्त्र एवं व्यापक अर्थशास्त्र में अधिक अन्तर विषय-सामग्री का नहीं है, जितना कि अध्ययन नीति का है। विषय-सामग्री (Subject Matter) को अध्ययनकर्ता सुविधानुसार या इच्छानुसार दोनों ही प्रकार के अध्ययन में शामिल कर सकता है। उदाहरण के लिये एक उद्योग सूक्ष्म अर्थशास्त्र में जा सकता है लेकिन सुविधानुसार इसे व्यापक अर्थशास्त्र में भी रखा जा सकता है, क्योंकि एक उद्योग में बहुत सी फर्म होती हैं।